9

''अब हम क्या करें?''

(यूहन्ना 15)

''जैसे पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसे कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं। ... मेरी आज्ञा यह है, कि जैसे मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेम रखो। इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे। ... इन बातों की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिए देता हूं, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो'' (आयतें 9-17)।

मान लीजिए कि एक बहुत बड़ी परेशानी आ गई है, यानी इतनी भयंकर परिस्थिति कि आपको अपने प्रियजनों को अगुआई देनी है कि आपके जाने के बाद जीवन का सामना कैसे करना है। आप उन्हें क्या उपदेश देंगे? उनके सामने आने वाले कठिन समयों में सहायता के लिए आप उन्हें क्या बताते हैं।

गुरुवार की रात उस अटारी वाले कमरे में यीशु अपने प्रेरितों को अपनी गिरफ़्तारी की अन्धेरी रात, अगली सुबह होने वाली अपनी पेशियों के दिल दहला देने वाले सदमे और शुक्रवार की सुबह और दोपहर बाद उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के द्वारा अपनी भयंकर मृत्यु का सामना करने के लिए तैयार कर रहा था। एक दम से उन्होंने स्तब्ध हो जाना था। इन त्रास्दियों में उन्हें चूर चूर कर देने की क्षमता थी। अन्त में यह समझ आने पर कि उनका स्वामी और प्रभु उन्हें छोड़कर एकता के पास लौट गया है, अकेलेपन की उनकी समझ से विनाशकारी प्रभाव हो सकते थे। उन्होंने कभी ऐसा ऐसा भयंकर स्वप्न नहीं देखा था। जिस संसार को वे जानते थे उसे उस दुष्ट द्वारा उलट पलट कर दिया जाने वाला था। यीशु उन्हें क्या कह सकता था जिनसे वे इन त्रासद अनुभवों में से सुरक्षित निकल पाते?

यूहन्ना 15:9-17 में हम यीशु को अपने प्रेरितों को उनके सामने भयभीत करने वाली उलझन में से बड़े प्रेम से अगुआई करते हुए देखते हैं। उसने उन्हें एक सरवाइवल किट दी जिसका इस्तेमाल वे समय आने पर अपने लिए अपने टूटे हुए संसार के टुकड़े करने के लिए कर सकते थे।

उसके प्रेम को स्मरण रखो

पहले उसने यह विचार करने का आग्रह किया कि उसने उनसे कितना प्रेम किया। उसने उन्हें पहले बताया था, ''जैसे पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो'' (15:9)। वे उसकी आज्ञाओं को मानकर उसके प्रेम में बने रह सकते थे। उसने

आगे कहा, ''इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे'' (15:13)। उसे अपने लिए मरते हुए देखने के बाद उन्हें समझ आया कि उनके लिए यह उसका सबसे बड़ा उपहार था।

उसकी आज्ञाओं को मानो

दूसरा, उसने उन्हें अपनी आज्ञाओं को मानने के लिए कहा। आज्ञा मानना शिष्टता का तरीका रहा है। इन चेलों के लिए अपने प्रेम के कारण यीशु ने उनके लिए बेहतरीन की इच्छा की और बेहतरीन काम किया। वह उन्हें उसमें अर्थात उसके प्रेम भरे अनुग्रह में जो उसने उनके लिए दिया था, बने रहने का इच्छुक है। ''यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसे कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं'' (15:10)।

उसके मित्र बनो

तीसरा, उसने उन्हें यह स्मरण रखने को कहा कि वे उसके मित्र बनें। उसने उन्हें उसके जो वह कर रहा था, अपने सहभागी बनाया था: ''जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो। अब से मैं तुम्हें दास न कहूंगा, ... परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं'' (15:14, 15)। पिता ने यीशु को संसार के लिए अपनी बड़ी योजना बताई थी। आरम्भ में यीशु ने प्रेरितों को उन पर उन बातों को प्रगट करके जो वह करने वाला था, अपनी योजना में मिला लिया। इस योजना के भाग के रूप में अब वह उनसे बड़ा फल लाने को तैयार था। वे उसके मित्र थे अर्थात संसार की सबसे बड़ी योजना में सहभागी थे।

फल लाओ

चौथा, उसने उन्हें स्मरण रखने को कहा कि उसने उन्हें फल लाने को चुना है। वे चुने हुए लोग थे। उसने उन में भरोसा जताया था और उसने कहा कि वह उन पर निर्भर है। ''तुम ने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, ...'' (15:16)। उन्हें शेष समय के लिए स्थिर रहने के लिए इस संसार में फल लाना था। संसार को इन लोगों की आवश्यकता थी। उसके फल लाने वाले होने के द्वारा संसार में उसके कार्य को करने के लिए यीशु को भी उनकी आवश्यकता थी।

उसके नाम में प्रार्थना करो

पांचवां, उसने उन्हें उसके नाम में पिता से प्रार्थना करने को स्मरण रखने को कहा। उसने कहा, ''तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे,'' वह तुम्हें देगा (15:16)। अपने काम को करने के लिए आवश्यक किसी भी चीज़ को मांगने में अपने नाम और अधिकार का इस्तेमाल करने की अनुमति देकर यीशु ने पिता के साथ बातचीत का सीधा सम्पर्क करवा दिया।

यीशु प्रेरितों को बता रहा था कि वह उन्हें पिता से प्रार्थना करने की योग्यता देगा। उसने पिता के सिंहासन के सामने उनकी प्रार्थनाएं ले जाकर उनके बड़े सिफारिश करने वाले के रूप

में काम करने की प्रतिज्ञा की।

एक-दूसरे से प्रेम रखो

छठा, उसने उन्हें एक-दूसरे से प्रेम रखने को कहा। ''इन बातों की आज्ञा में तुम्हें इसलिए देता हूं, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो'' (यूहन्ना 15:17)। इस आज्ञा में हमें सामर्थ दिखाई देती है। यह बहुत ही आवश्यक है कि उसका परिवार एकजुट रहता। यदि एक-दूसरे से प्रेम रखते तो प्रेरितों ने बड़े-बड़े काम कर पाना था, यहां तक कि संसार द्वारा दिए जाने वाले बड़े से बड़े कष्ट में भी स्थिर रहना था।

प्रभु ने उन्हें न केवल आज्ञा बल्कि नमूना भी दिया। उन्हें एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम रखना था जैसे उसने उन से रखा था: ''मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक-दूसरे से प्रम रखो'' (13:34)। यीशु ने उन्हें दिखाया था कि एक दूसरे से सही ढंग से प्रेम कैसे रखना है। एक-दूसरे के लिए उनका प्रेम उनके आस पास रहने वाले लोगों को दिखाई देना था। इसका उनसे मिलने वाले हर व्यक्ति को पता चलना था (13:35)।

सबसे बुरा होने पर हमें क्या करना चाहिए?

- हमें पता होना आवश्यक है कि हमसे प्रेम किया गया है।
- हमें यीशु के आज्ञापालन का महत्व पता होना अवश्यक है।
- हमें याद करना आवश्यक है कि हमें एक उच्च बुलाहट मिली है।
- हमें पता होना आवश्यक है कि हम सबसे बड़े कार्य में सहभागी हैं।
- हमें आश्वस्त होना आवश्यक है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा।
- हमें मानना आवश्यक है कि एक परिवार के रूप में हम आने वाली किसी भी बात का सामना कर सकते हैं।

यह वे आश्वासन हैं जो उद्धारकर्त्ता ने अपने प्रेरितों को दिए। उन्हें उसके द्वारा दिए जाने वाले हर प्रोत्साहन की आवश्यकता थी। अपने मनों में इन बातों को रखकर वे गिरफ़्तारी, पिटाई और क्रूस पर चढ़ाए जाने का सामना कर सकते थे। अपने मनों में यीशु की शिक्षाओं से वे आने वाले तुरन्त और बाद के सतावों को सह सकते थे। तसल्ली की इन बातों से यीशु के चेलों को अन्त तक स्थिर रहने में सहायता मिलनी थी।

सारांश

एक गौण ढंग से, प्रेरितों को कही गई यीशु की बातें हमारे लिए भी अद्भुत आश्वासन हैं। परेशानियां आने पर हमें भी उन्हें याद रखना आवश्यक है। हमारे ऊपर परीक्षाओं की प्रलय आने पर हम क्या कर सकते हैं? यीशु हमें वही बताता है जो उसने प्रेरितों से कहा था कि हम अपने लिए यीशु के प्रेम को ध्यान में रखें, निरन्तर आज्ञापालन को अपने आपको उसको सौंप दें, अपनी उच्च बुलाहट को याद रखें, यीशु के कार्य में अपनी सहभागिता को समझें, यीशु के नाम में परमेश्वर से प्रार्थना करें, और एक-दूसरे से प्रेम रखें। ऐसा कार्यकारी विश्वास ही इस संसार

पर विजय पाता है।

''हमने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए। पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है? हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें। इसी से हम जानेंगे, कि हम सत्य के हैं; और जिस बात में हमारा मन हमें दोष देगा, उसके विषय में हम उसके साम्हने अपने अपने मन को ढाढ़स दे सकेंगे। क्योंकि परमेश्वर हमारे मन से बड़ा है; और सब कुछ जानता है'' (1 यूहन्ना 3:16-20)।